رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

शुद्ध अक़ीदा

हिन्दी | هندي | العقيدة الصحيحة

اللَّجْنَةُ العِلْمِيَّةُ
بِرِئَاسَةِ الشُّؤُونِ الدِّينِيَّةِ بِالمَسْجِدِ الحَرَامِ وَالمَسْجِدِ النَّبَوِيِّ

العَقِيدَةُ الصَّحِيحَةُ

शुद्ध अक़ीदा

اللَّجْنَةُ العِلْمِيَّةُ

بِرِئَاسَةِ الشُّؤُونِ الدِّينِيَّةِ بِالمَسْجِدِ الحَرَامِ وَالمَسْجِدِ النَّبَوِيِّ

بِسْمِ اللهِ الرَّحمَنِ الرَّحِيمِ

शुद्ध अक़ीदा

अध्ययन समिति, प्रेसीडेंसी धार्मिक कार्य मस्जिद-ए-हराम एवं मस्जिद-ए-नबवी

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा दयालु अत्यंत दयावान है

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह की है जो सारे जहानों का पालनहार है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है और उसका कोई साझी नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे और उसके रसूल हैं। दरूद एवं सलाम हो उनपर, उनके परिजनों और उनके साथियों पर तथा क़यामत के दिन तक भलाई के साथ उनके साथियों के दिखाए हुए पथ की अनुसरण करने वालों पर।

अब मूल विषय पर आते हैं;

अल्लाह तआला ने हमें इस सांसारिक जीवन में एक महान और उच्च उद्देश्य के लिए पैदा किया है। वह उद्देश्य यह है कि हम केवल उसी की इबादत करें और उसके एक होने को स्वीकार करें, जैसा कि उसने फरमाया है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦ مَآ أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَآ أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ۝٥٧ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلْقُوَّةِ ٱلْمَتِينُ ۝٥٨﴾

"और मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।

मैं उनसे कोई रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएँ। निःसंदेह अल्लाह ही बहुत रोज़ी देनेवाला, बड़ा शक्तिशाली, अत्यंत मज़बूत है।" [सूरा ज़ारियात : 56-58]

यही वह मूल उद्देश्य है, जिसके लिए अल्लाह ने सृष्टि की रचना की, किताबें उतारीं, रसूलों को भेजा, जन्नत और जहन्नम को बनाया और इंसानों को दो समूहों में विभाजित किया। महान अल्लाह ने कहा है :

﴿...فَرِيقٞ فِي ٱلۡجَنَّةِ وَفَرِيقٞ فِي ٱلسَّعِيرِ﴾

"एक समूह जन्नत में तथा एक समूह भड़कती आग में होगा।" [सूरा शूरा : 7]

- तौहीद धर्म की बुनियाद है, जिसके सिवाअल्लाह पहले और बाद के लोगों से कोई भी दीन स्वीकार नहीं करता। यही क़ुरआन का रहस्य और ईमान का सार है।

- तौहीद ही इस्लाम धर्म है, ईमान और हिदायत है, तक़वा और भलाई है।

अल्लाह ने इसे इस्लाम कहा है। पवित्र अल्लाह ने कहा है :

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُ...﴾

"निःसंदेह दीन (धर्म) अल्लाह के निकट इस्लाम ही है..." [सूरा आल-ए-इमरान : 19] एक और जगह में पवित्र अल्लाह ने कहा है :

﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٨٥﴾

"और जो इस्लाम के अलावा कोई और धर्म तलाश करे, तो वह उससे

हरगिज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में घाटा उठाने वालों में से होगा।" [सूरा आल-ए-इमरान : 85]

अल्लाह ने तौहीद को ईमान भी कहा है :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ...﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ..." [सूरा निसा : 136] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿قُولُوٓاْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا...﴾

"(ऐ मुसलमानो!) तुम कह दो : हम अल्लाह पर ईमान लाए और उसपर जो हमारी ओर उतारा गया..." [सूरा बक़रा : 136]

अल्लाह ने तौहीद को हिदायत भी कहा है :

﴿...وَلَقَدۡ جَآءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ ٱلۡهُدَىٰٓ﴾

"जबकि निःसंदेह उनके पास उनके पालनहार की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है।" [अल-नज्म : 23]

अल्लाह ने तौहीद को तक़्वा भी कहा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ...﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो..." [सूरा बक़रा : 278] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُواْ رَبَّكُمُ...﴾

"ऐ लोगो! अपने उस पालनहार से डरो..." [सूरा निसा : 1]

अल्लाह ने तौहीद को नेकी भी है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿...وَلَٰكِنَّ ٱلۡبِرَّ مَنۡ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ...﴾

"...बल्कि असल नेकी तो उसकी है, जो अल्लाह और अंतिम दिन (आख़िरत) पर ईमान लाए..." [सूरा बक़रा : 177]

- तौहीद की गवाही वह पहली चीज़ है, जिससे कोई व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश करता है। वह कहता है : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

- तौहीद के आह्वान के लिए अल्लाह ने सारे रसूलों को भेजा। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥﴾

"और हमने आपसे पहले जो भी रसूल भेजा, उसकी ओर हम यही वह्य (प्रकाशना) करते थे कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत करो।" [सूरा अंबिया: 25] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَ...﴾

"और निःसंदेह हमने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (अल्लाह के अलावा की पूजा) से बचो..." [सूरा नह्ल : 36] नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा था :

﴿...ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرُهُۥ...﴾

"अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं।" [सूरा आराफ़ : 59] इसी तरह हूद, सालेह, शुऐब और अन्य नबियों ने भी अपनी-अपनी जातियों से यही बात कही थी।

- तौहीद ही अल्लाह की ओर से उसके सम्मानित रसूलों के लिए वह्य (प्रकाशना) है। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿يُنَزِّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةَ بِٱلرُّوحِ مِنۡ أَمۡرِهِۦ عَلَىٰ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦٓ أَنۡ أَنذِرُوٓاْ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱتَّقُونِ ٢﴾

"वह फ़रिश्तों को वह्य के साथ, अपने आदेश से, अपने बंदों में से जिसपर चाहता है, उतारता है, कि (लोगों को) सावधान कर दो कि मेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, अतः मुझ ही से डरो।" [सूरा नह्ल : 2]

रूह से मुराद वह्य है। वैसे कुछ लोगों ने नबूवत भी कहा है।

- अल्लाह ने इसे अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए मृत्यु तक अनिवार्य किया था। महान अल्लाह ने कहा है :

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ ٩٩﴾

"और अपने रब की इबादत करते रह, यहाँ तक कि तेरे पास यक़ीन (मौत) आ जाए।" [सूरा हिज्र : 99]

- तौहीद नेक अमल का सिरमौर और अमल की स्वीकार्यता की शर्त है। क्योंकि सर्वशक्तिमान अल्लाह किसी भी अमल या इबादत को स्वीकार नहीं करता, जब तक उसमें दो शर्तें पूरी न हों : उसे केवल एक अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए किया जाए और उसकी उतारी हुई शरीयत के

अनुसार किया जाए। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿...فَمَن كَانَ يَرۡجُواْ لِقَآءَ رَبِّهِۦ فَلۡيَعۡمَلۡ عَمَلٗا صَٰلِحٗا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهِۦٓ أَحَدَۢا﴾

"अतः जो कोई अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो, उसके लिए आवश्यक है कि वह अच्छे कर्म करे और अपने पालनहार की इबादत में किसी को साझी न बनाए।" [सूरा कह्फ़ : 110]

और एक हदीस में आया है :

«قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: أَنَا أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ، مَنْ عَمِلَ عَمَلًا أَشْرَكَ فِيهِ مَعِي غَيْرِي تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ».

"बरकत वाले एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : मैं तमाम साझेदारों की तुलना में साझेदारी से सबसे अधिक निस्पृह हूँ। जिसने कोई ऐसा कार्य किया, जिसमें किसी को मेरा साझी ठहराया, मैं उसके साथ ही उसके साझी बनाने के इस कार्य से भी किनारा कर लेता हूँ।" सहीह मुस्लिम।

- हर वह कार्य जो तौहीद से जुड़ा नहीं है, उसका कोई वज़न नहीं है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِمۡ وَلِقَآئِهِۦ فَحَبِطَتۡ أَعۡمَٰلُهُمۡ فَلَا نُقِيمُ لَهُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ وَزۡنٗا ١٠٥﴾

"यही वे लोग हैं, जिन्होंने अपने पालनहार की आयतों और उससे मिलने का इनकार किया, तो उनके कर्म बेकार हो गए। अतः हम क़यामत के दिन उनके लिए कोई वज़न नहीं रखेंगे।" [सूरा कह्फ़ : 105]

- तौहीद ही वह सत्य है, जिसे सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने अपने बंदों पर अनिवार्य किया है। यदि वे इसे पूर्ण रूप से अपनाते हैं तो सफल होते हैं और यदि इसमें शिर्क मिलाते हैं, तो विनाश को प्राप्त होते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿وَلَقَدۡ أُوحِيَ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ لَئِنۡ أَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٦٥﴾

"और निःसंदेह तुम्हारी ओर एवं तुमसे पहले के नबियों की ओर वह्य की गई है कि यदि तुमने शिर्क किया, तो निश्चय तुम्हारा कर्म अवश्य नष्ट हो जाएगा और तुम निश्चित रूप से हानि उठाने वालों में से हो जाओगे।" [सूरा ज़ुमर : 65]

मुआज़ रज़ियल्लाहु अनहु की हदीस में है :

«فَإِنَّ حَقَّ اللهِ عَلَى العِبَادِ: أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلَا يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، وَحَقَّ العِبَادِ عَلَى اللهِ: أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا».

"अतः अल्लाह का हक बंदों के ऊपर यह है कि वे उसकी इबादत (उपासना) करें और उसका किसी को साझी न ठहराएँ, एवं बंदों का अल्लाह पर हक़ यह है कि वह उस व्यक्ति को दंड न दे, जो उसके साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराता हो।" इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

- तौहीद (एकेश्वरवाद) गुनाहों और पापों को मिटा देता है। एक हदीस-ए-कुदसी में है :

«يَا ابْنَ آدَمَ، إِنَّكَ لَوْ أَتَيْتَنِي بِقُرَابِ الأَرْضِ خَطَايَا [أي: بمِثلها

وَمَا يُقارِبها]، ثُمَّ لَقِيتَنِي لا تُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَأَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً».

"ऐ आदम की संतान! यदि तू मेरे पास ज़मीन भर गुनाह लेकर आए और फिर मुझसे मिले इस अवस्था में कि तूने किसी वस्तु को मेरा साझीदार न ठहराया हो, तो मैं तेरे पास ज़मीन भर क्षमा लेकर आऊँगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अल्बानी ने अन्य रिवायतों के आधार पर हसन कहा है।

- तौहीद जन्नत का वह द्वार है, जिसे छोड़ किसी दूसरे द्वार से कोई जन्नत नहीं जा सकता। जिसने किसी को अल्लाह का साझी ठहराया, उसने अपने लिए इस दरवाज़े को बंद कर लिया। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿...إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُ...﴾

"नि:संदेह सच्चाई यह है कि जो भी अल्लाह के साथ साझी बनाए, तो निश्चय उसपर अल्लाह ने जन्नत हराम (वर्जित) कर दी और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है।" [सूरा माइदा : 72]

अल्लाह तआला शिर्क को क्षमा नहीं करता, यदि कोई व्यक्ति शिर्क करते हुए ही मर जाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُ...﴾

"नि:संदेह, अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और इसके सिवा जो जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा..." [सूरा निसा : 48]

एक हदीस में आया है :

«مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ لَقِيَهُ يُشْرِكُ بِهِ دَخَلَ النَّارَ».

"जो अल्लाह से इस अवस्था में मिलेगा कि किसी को उसका साझी न बनाया होगा, वह जन्नत में प्रवेश करेगा और जो उससे इस अवस्था में मिलेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया होगा, वह जहन्नम में प्रवेश करेगा।" इसे मुस्लिम ने रवायत किया है।

- तौहीद (एकेश्वरवाद) ही वह है कि जो उसे अपनाने वाले को हमेशा के लिए नरक में रहने से रोकता है, यदि वह उसके दिल में राई के दाने के वज़न में से थोड़ी सी भी मात्रा के बराबर भी हो। एक हदीस में है :

«فَإِنَّ اللهَ قَدْ حَرَّمَ عَلَى النَّارِ مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللهِ»

"अल्लाह ने आग पर उस व्यक्ति को हराम कर दिया है, जो अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कह दे।" इसे बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है।

- शुद्ध तौहीद (एकेश्वरवाद) ही दुनिया और आख़िरत में पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَلَمۡ يَلۡبِسُوٓاْ إِيمَٰنَهُم بِظُلۡمٍ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلۡأَمۡنُ وَهُم مُّهۡتَدُونَ ٨٢﴾

"जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अपने ईमान को अत्याचार (शिर्क) के

साथ नहीं मिलाया, वही लोग हैं जिनके लिए शांति है तथा वही मार्गदर्शन पाने वाले हैं।" [सूरा अनआम : 82]

- तौहीद (एकेश्वरवाद) का पालन करने के बाद ही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश प्राप्त होगी। एक हदीस में है :

«أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ: مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، خَالِصًا مِنْ قَلْبِهِ أَوْ نَفْسِهِ».

"क़यामत के दिन मेरी शिफ़ारिश का लाभ उठाने वाला सबसे शौभाग्यशाली व्यक्ति वह होगा, जिसने सच्चे मन से या साफ़ नीयत से “ला इलाहा इल्लल्लाह” कहा होगा।" इसे इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है।

- तौहीद वह मार्ग है जिस पर यह समस्त ब्रह्मांड चलता है, सजीव और निर्जीव, सब अल्लाह के तौहीद के अधीन हैं और उसकी तस्बीह करते हैं, जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبۡعُ وَٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهِنَّۚ وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهِۦ وَلَٰكِن لَّا تَفۡقَهُونَ تَسۡبِيحَهُمۡۚ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورٗا ٤٤﴾

"सातों आकाश तथा धरती और उनके अंदर मौजूद सभी चीज़ें उसकी पवित्रता का वर्णन करती हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का गान न करती हो। लेकिन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। निःसंदेह वह अत्यंत सहनशील, बहुत क्षमा करने वाला है।" [सूरा इसरा : 44]

सारांशा यह कि इमाम इब्न-ए-क़ैयिम ने अपनी किताब 'ज़ाद अल-

मआद' में जो कुछ लिखा है, उसके अनुसार : 'कलिमा-ए-तौहीद एक ऐसा कलिमा है जिसके कारण धरती और आकाश कायम हैं, और जिसके लिए तमाम मख़लूक़ात की सृष्टि की गई, उसी के लिए अल्लाह तआला ने अपने रसूलों को भेजा, अपनी किताबें उतारीं और शरीयत के कानून बनाए।'

उसी के लिए तराज़ू स्थापित किए गए, दफ़तर तैयार किए गए, जन्नत और जहन्नम का बाज़ार बनाया गया और उसी के द्वारा सृष्टि ईमान वालों और काफ़िरों, नेक और बदकारों में विभाजित हो गई। अतः वही रचना और आदेश का स्रोत तथा पुरस्कार और दंड का आधार है। उसी के लिए सृष्टि की रचना हुई, उसके तथा उसके अधिकारों के बारे में प्रश्न एवं उत्तर होगा और उसी के आधार पर सवाब एवं दंड दिया जाएगा। उसी पर क़िबला स्थापित किया गया, उसी पर धर्म की बुनियाद रखी गई और उसी के लिए जिहाद की तलवारें खींची गईं। वही तमाम बंदों पर अल्लाह का अधिकार है। वही इस्लाम का कलिमा और शांति के घर की कुंजी है।

उसके बारे में पहले और बाद के लोगों से सवाल किया जाएगा। चुनांचे अल्लाह के सामने बंदे के क़दम उस समय तक नहीं हिलेंगे, जब तक उससे दो सवाल न पूछ लिए जाएँ : तुम किसकी इबादत करते थे? और तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया? पहले प्रश्न का उत्तर "ला इलाहा इल्लल्लाह" को ज्ञान, इक़रार और अमल द्वारा चरितार्थ करने के फलस्वरूप दिया जा सकेगा। जबकि दूसरे प्रश्न का उत्तर 'मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं' को ज्ञान, इक़रार एवं अनुसरण द्वारा चरितार्थ करने के फलस्वरूप दिया जा सकेगा।

ईमान के छह स्तंभ :

हर मुसलमान को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि ईमान के छह

स्तंभ होते हैं, जिनके बिना ईमान पूरा नहीं होता है। यदि इनमें से कोई एक स्तंभ गिर जाए, तो व्यक्ति कभी भी मोमिन नहीं हो सकता; क्योंकि उसने ईमान के एक स्तंभ को खो दिया है।

ये छह स्तंभ वही हैं जो हदीस़-ए-जिब्रील में आए हैं। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह प्रश्न किया:

«فَأَخْبِرْنِي عَنِ الْإِيمَانِ، قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ، وَمَلَائِكَتِهِ، وَكُتُبِهِ، وَرُسُلِهِ، وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ».

मुझे ईमान के बारे में बताइए, तो आपने कहा : "ईमान यह है कि तुम अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों, अंतिम दिन तथा अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान लाओ।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

अल्लाह पर ईमान

हम अल्लाह की रुबूबीयत (पालनहार होने) पर ईमान रखते हैं। अर्थात इस बात पर विश्वास रखते हैं कि केवल वही पालनहार, सृष्टिकर्ता, स्वामी तथा सभी कार्यों का प्रबंधक है।

हम अल्लाह की उलूहीयत (पूज्य होने) पर ईमान रखते हैं। अर्थात इस बात पर विश्वास रखते हैं कि वही सच्चा पूज्य है; इसलिए अल्लाह के अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं है और उसके अतिरिक्त पूजी जाने वाली सारी चीज़ें असत्य हैं।

अल्लाह के नामों तथा उसके गुणों पर भी हमारा ईमान है। अर्थात इस बात पर हमारा विश्वास है कि अच्छे से अच्छे नाम और उच्चतम तथा पूर्णतम गुण उसी के लिए हैं।

हम इन सब बातों में उसकी वहदानियत (एक होने) पर ईमान रखते हैं। अर्थात इस बात पर ईमान रखते हैं कि उसके पालनहार तथा पूज्य होने और उसके नामों एवं गुणों में उसका कोई शरीक नहीं है।

उच्च अल्लाह ने कहा है :

﴿رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا فَٱعۡبُدۡهُ وَٱصۡطَبِرۡ لِعِبَٰدَتِهِۦۚ هَلۡ تَعۡلَمُ لَهُۥ سَمِيّٗا ٦٥﴾

"जो आकाशों और धरती का और उन दोनों के बीच की चीज़ों का पालनहार है। अतः उसी की इबादत कर तथा उसकी इबादत पर पर दृढ़ रह। क्या तुम उसका समकक्ष किसी को जानते हैं?" [सूरा मर्यम : 65]

एक और जगह में पवित्र अल्लाह ने कहा है :

﴿...لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ﴾

"उसके जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।" [सूरा शूरा : 11]

हमारा ईमान है कि अल्लाह अपने अर्श के ऊपर बुलंद है, हमारे हालात को जानता है, हमारी बातों को सुनता है, हमारे कार्यों को देखता है, हमारे मामलों का प्रबंध करता है, निर्धन को रोज़ी देता है, टूटे हुए को सहारा देता है, जिसे चाहता है बादशाहत प्रदान करता है, जिससे चाहता है बादशाहत छीन लेता है, जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है अपमानित करता है, उसी के हाथ में कल्याण है और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

जिसकी यह शान हो, वह अपने बंदों और अपने वलियों (मित्रों) का

अर्थात ईमान वालों का साथ देता है, उनकी सहायता करता है, उनको समर्थन देता है, जबकि वह अपनी तमाम सृष्टियों तथा उनके हालात से अवगत है, उनकी बातें सुनता है और उनके दिलों की बातों को जानता है। जबकि वह ख़ुद अपने अर्श के ऊपर है अपने इस कथन के अनुसार :

﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۝٥﴾

"वह रहमान (अत्यंत दयावान् अल्लाह) अर्श (सिंहासन) पर बुलंद हुआ।" [सूरा ताहा : 5] वह अपने अर्श के ऊपर अपनी महिमा एवं प्रताप के अनुसार है। उसने कहा है :

﴿...لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ﴾

"उसके जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है।" [सूरा शूरा : 11]

हमारा ईमान अल्लाह तआला के उन नामों एवं गुणों पर है, जिनका प्रमाण स्वयं अल्लाह तआला की वाणी अथवा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मिलता है। इस संबंध में हम अपने आपको निम्नलिखित दो बड़ी त्रुटियों से अपने आपको बचाते हैं :

समान बताना : यानी दिल या ज़ुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला के गुण सृष्टि के गुणों के समान हैं।

कैफ़ियत बताना : यानी दिल या ज़ुबान से यह कहना कि अल्लाह तआला के गुणों की वर्णन इस प्रकार है।

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला उन सब गुणों से पाक एवं पवित्र है, जिन्हें अपनी ज़ात के सम्बन्ध में उसने स्वयं या उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अस्वीकार किया है। ध्यान रहे कि इस अस्वीकृति में,

सांकेतिक रूप से उनके विपरीत पूर्ण गुणों का प्रमाण भी मौजूद है। और इसी लिए अल्लाह ने अपने आप पर अत्याचार को हराम कर रखा है, क्योंकि वह पूर्ण न्याय का मालिक है। हम उन गुणों के विषय में चुप्पी धारण करते हैं, जिनके बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ामोशी बरती है।

फ़रिश्तों पर ईमान

हम अल्लाह तआला के फ़रिश्तों पर ईमान रखते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि वे :

﴿...عِبَادٌ مُّكۡرَمُونَ ٢٦ لَا يَسۡبِقُونَهُۥ بِٱلۡقَوۡلِ وَهُم بِأَمۡرِهِۦ يَعۡمَلُونَ ٢٧﴾

"सम्मानित बंदे हैं।

वे बात करने में उससे पहल नहीं करते और वे उसके आदेशानुसार ही काम करते हैं। [सूरा अंबिया : 26-27]

अल्लाह तआला ने उन्हें नूर से उत्पन्न किया, जो उसकी इबादत में लग गए तथा उसके आज्ञापालन के लिए पूर्णरूपेण समर्पित हो गए। उच्च एवं महान अल्लाह ने कहा है :

﴿...لَا يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسۡتَحۡسِرُونَ ١٩ يُسَبِّحُونَ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُونَ ٢٠﴾

"न उसकी इबादत से अभिमान करते हैं और न ज़रा भर थकते हैं।

वे रात-दिन (अल्लाह की) पवित्रता का गान करते हैं, दम नहीं लेते।" [सूरा अंबिया : 19-20]

अल्लाह तआला ने उन्हें हमारी नज़रों से ओझल रखा है, इसलिए हम उन्हें देख नहीं सकते। अल्बत्ता, कभी-कभी अल्लाह तआला अपने कुछ बन्दों के लिए उन्हें प्रकट भी कर देता है।

हमारा ईमान है कि फ़रिश्तों के ज़िम्मे कुछ काम लगाये गये हैं। एक फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं, जिनको वह्य पहुँचाने का कार्यभार सौंपा गया है। चुनांचे वह अल्लाह के पास से वह्य ले कर नबियों एवं रसूलों के पास उतरते हैं।

एक फ़रिश्ता मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं, जिनको वर्षा एवं वनस्पति की ज़िम्मेदारी सोंपी गयी है।

एक फ़रिश्ता इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम हैं, जिन्हें क़यामत आने पर, पहले लोगों की बेहोशी के लिए फिर दोबारा उन्हें ज़िन्दा करने के लिए सूर में फूँकने का कार्यभार दिया गया है।

एक फ़रिश्ता मलकुल-मौत हैं, जिन्हें मृत्यु के समय प्राण निकालने का काम सोंपा गया है।

एक फ़रिश्ता मलकुल-जिबाल (पहाड़ों का फ़रिश्ता) हैं, जिन्हें पहाड़ों से सम्बन्धित कार्य दिये गये हैं।

कुछ फ़रिश्ते माँ के कोख में पल रहे बच्चों से संबंधित कार्यों पर नियुक्त किए गये हैं। कुछ फ़रिश्ते मनुष्यों की रक्षा के लिए नियुक्त हैं। कुछ फ़रिश्तों के ज़िम्मे मनुष्यों के कर्मों को लिखने का काम है। हरेक व्यक्ति पर दो फ़रिश्ते नियुक्त हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿...عَنِ ٱلْيَمِينِ وَعَنِ ٱلشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾﴾

"दाहिनी और बाईं ओर बैठे हैं।

वह कोई बात नहीं बोलता, परंतु उसके पास एक निरीक्षक तैयार रहता है।" [सूरा क़ाफ़ : 17-18]

कुछ फ़रिश्ते मृतक से उसके दफ़न के बाद सवाल करने के काम पर नियुक्त हैं।

आकाशीय ग्रंथों पर ईमान

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर कुछ किताबें उतारी हैं, जो सृष्टी पर हुज्जत क़ायम करने तथा अमल करने वालों को रास्ता दिखाने के लिए हैं। इन सब पर ईमान रखना फ़र्ज़ है और इनमें से किसी एक का इंकार करना, सबका इंकार करना है। अल्लाह तआला ने फरमाया है :

﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ وَقَالُواْ سَمِعۡنَا وَأَطَعۡنَاۖ غُفۡرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ ٢٨٥﴾

"रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए, जो उनकी तरफ़ उनके पालनहार की ओर से उतारी गई तथा सब ईमान वाले भी। हर एक अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी पुस्तकों और उसके रसूलों पर ईमान लाया। (वे कहते हैं) हम उसके रसूलों में से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते। और उन्होंने कहा हमने सुना और हमने आज्ञापालन किया। हम तेरी क्षमा चाहते हैं ऐ हमारे पालनहार! और तेरी ही ओर लौटकर जाना है।" [सूरा बक़रा : 285]

अल्लाह तआला ने हर रसूल के साथ एक किताब उतारी है। इसकी दलील अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿لَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا بِٱلۡبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلۡنَا مَعَهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلۡقِسۡطِ...﴾

"निःसंदेह हमने अपने रसूलों को स्पष्ट प्रमाणों के साथ भेजा तथा उनके साथ पुस्तक और तराज़ू उतारा, ताकि लोग न्याय पर क़ायम रहें।" [सूरा हदीद : 25]

इनमें से कुछ किताबें इस प्रकार हैं :

तौरात : इसे अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा और यह बनी इस्राईल की सबसे महान किताब थी। अल्लाह तआला का कथन है :

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَا ٱلتَّوۡرَىٰةَ فِيهَا هُدٗى وَنُورٞ...﴾

"निःसंदेह हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था।" [सूरा माइदा : 44]

इंजील : इसे अल्लाह तआला ने ईसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था और यह तौरात की पुष्टि करने वाली एवं एक पूरक पुस्तक थी। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿وَقَفَّيۡنَا عَلَىٰٓ ءَاثَٰرِهِم بِعِيسَى ٱبۡنِ مَرۡيَمَ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلتَّوۡرَىٰةِۖ وَءَاتَيۡنَٰهُ ٱلۡإِنجِيلَ فِيهِ هُدٗى وَنُورٞ وَمُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلتَّوۡرَىٰةِ وَهُدٗى وَمَوۡعِظَةٗ لِّلۡمُتَّقِينَ ٤٦﴾

"और हमने उनके पीछे उन्हीं के पद-चिह्नों पर मरयम के बेटे ईसा को भेजा, जो उससे पहले (उतरने वाली) तौरात की पुष्टि करने वाला था तथा हमने उसे इंजील प्रदान की, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश थी और वह उससे

पूर्व (उतरने वाली किताब) तौरात की पुष्टि करने वाली थी तथा वह (अल्लाह से) डरने वालों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन और उपदेश थी।" [सूरा माइदा : 46]

ज़बूर : इसे अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम पर उतारा था। अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿...وَءَاتَيْنَا دَاوُۥدَ زَبُورًا﴾

"और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान की।" [सूरा इसरा : 55]

इब्राहीम एवं मूसा अलैहिमस्सलाम के सहीफ़े भी अल्लाह की उतारी हुई किताबें हैं। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿إِنَّ هَٰذَا لَفِي ٱلصُّحُفِ ٱلْأُولَىٰ ۝١٨ صُحُفِ إِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ ۝١٩﴾

"निःसंदेह यह बात पहले सहीफ़ों (ग्रंथों) में है।

इबराहीम तथा मूसा के सहीफ़ों (ग्रंथों) में।" [सूरा आला : 18-19]

महान क़ुरआन : इसे अल्लाह ने अपने अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा है। अल्लाह तआला ने कहा है :

﴿...هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَٰتٍ مِّنَ ٱلْهُدَىٰ وَٱلْفُرْقَانِ...﴾

"मार्गदर्शन है तथा मार्गदर्शन और (सत्य एवं असत्य के बीच) अंतर करने के स्पष्ट प्रमाण हैं।" [सूरा बक़रा : 185] यह पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाली तथा उनकी संरक्षक पुस्तक है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ...﴾

"और (ऐ नबी!) हमने आपकी ओर यह पुस्तक (क़ुरआन) सत्य के साथ उतारी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि करने वाली तथा उनकी संरक्षक और उनपर गवाह है।" [सूरा माइदा : 48]

अल्लाह ने इसके द्वारा पिछली सारी शरीयतों को निरस्त कर दिया है और इसके साथ दुरुपयोग करने वाले तथा छेड़छाड़ करने वाले हाथों से सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी स्वयं ली है। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ٩﴾

"नि:संदेह हमने ही यह ज़िक्र (क़ुरआन) उतारी है और नि:संदेह हम ही इसकी अवश्य रक्षा करने वाले हैं।" [सूरा हिज्र : 9] क्योंकि यह क़ुरआन क़यामत तक तमाम सृष्टि पर हुज्जत बनकर मौजूद रहेगा।

जबकि शेष पुस्तकें एक निर्धारित समय तक के लिए हुआ करती थीं और उस समय तक बाक़ी रहती थीं, जब तक उन्हें निरस्त करने वाली किताब न आ जाती। अल्लाह ने उनकी सुरक्षा का काम उनके विद्वानों और धर्मगुरुओं के हवाले कर रखा था, जिन्होंने उसे सुरक्षित नहीं रखा। अतः उनके अंदर फेर-बदल, वृद्धि और कमी हो गई। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿مِّنَ ٱلَّذِينَ هَادُواْ يُحَرِّفُونَ ٱلۡكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِۦ...﴾

"यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं, जो शब्दों को उनके (वास्तविक) स्थानों से फेर देते हैं।" [सूरा निसा : 46] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿فَوَيۡلٞ لِّلَّذِينَ يَكۡتُبُونَ ٱلۡكِتَٰبَ بِأَيۡدِيهِمۡ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنۡ عِندِ ٱللَّهِ لِيَشۡتَرُواْ بِهِۦ ثَمَنٗا قَلِيلٗاۖ فَوَيۡلٞ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتۡ أَيۡدِيهِمۡ وَوَيۡلٞ لَّهُم مِّمَّا يَكۡسِبُونَ ٧٩﴾

"तो उन लोगों के लिए बड़ा विनाश है, जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उसके द्वारा थोड़ा मूल्य हासिल करें! तो उनके लिए बड़ा विनाश उसके कारण है, जो उनके हाथों ने लिखा और उनके लिए बड़ा विनाश उसके कारण है जो वे कमाते हैं।" [सूरा निसा : 79]

रसूलों पर ईमान

हमारा ईमान है कि महान अल्लाह ने अपनी सृष्टि की ओर कुछ इन्सानों को रसूल बनाकर भेजा। महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعۡدَ ٱلرُّسُلِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ١٦٥﴾

"ऐसे रसूल जो शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे। ताकि लोगों के पास रसूलों के बाद अल्लाह के मुक़ाबले में कोई तर्क न रह जाए। और अल्लाह सदा से सब पर प्रभुत्वशाली, पूर्ण हिकमत वाला है।" [सूरा निसा : 165]

जिसने किसी एक नबी का इंकार किया, उसने सभी रसूलों का इंकार किया, क्योंकि किसी रसूल और दूसरे रसूल के बीच कोई अंतर नहीं है; क्योंकि उनकी दावत एक है और वह है केवल अल्लाह की इबादत। जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सम्पूर्ण मानवता की ओर रिसालत का इंकार किया, उसने सभी रसूलों का इंकार किया, यहाँ तक कि उस रसूल का भी, जिसके अनुकरण तथा जिसपर ईमान का उसे दावा है; क्योंकि अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿...لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ...﴾

"हम उसके रसूलों में से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते।" [सूरा बक़रा : 285] एक अन्य स्थान में उसने कहा है :

﴿...لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ...﴾

"हम इनमें से किसी एक के बीच अंतर नहीं करते।" [सूरा बक़रा : 136] अर्थात : बल्कि हम उन सब पर ईमान लाते हैं। महान अल्लाह के इस कथन पर गौर करें :

﴿كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ ٱلْمُرْسَلِينَ ١٠٥﴾

"नूह की जाति ने रसूलों को झुठलाया।" [सूरा शुअरा : 105] अल्लाह ने उन्हें सारे रसूलों को झुठलाने वाला ठहराया, हालाँकि नूह अलैहिस्सलाम से पूर्व कोई रसूल नहीं गुज़रा था।

महान अल्लाह ने यह भी फ़रमाया है :

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا۟ بَيْنَ ٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا۟ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ١٥٠ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَٰفِرُونَ حَقًّا ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَٰفِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ١٥١ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَلَمْ يُفَرِّقُوا۟ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُو۟لَٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ١٥٢﴾

"निःसंदेह जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ कुफ़्र करते हैं

और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उसके रसूलों के बीच अंतर करें तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं और कुछ का इनकार करते हैं और चाहते हैं कि इसके बीच कोई राह अपनाएँ।

यही लोग वास्तविक काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के लिए अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

तथा वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उन्होंने उनमें से किसी के बीच अंतर नहीं किया, यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह शीघ्र ही उनका बदला प्रदान करेगा तथा अल्लाह हमेशा से अति क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।" [सूरा निसा : 150-152]

हमारा ईमान है कि सबसे पहले रसूल नूह अलैहिस्सलाम और सबसे अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, अल्लाह सब रसूलों पर दया और शान्ति अवतरित करे।

﴿إِنَّآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ كَمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ نُوحٖ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعۡدِهِۦ...﴾

"(ऐ नबी!) निःसंदेह हमने आपकी ओर वह्य भेजी, जैसे हमने नूह और उसके बाद (दूसरे) नबियों की ओर वह्य भेजी थी।" [सूरा निसा :163]

हमारा ईमान है कि सबसे श्रेष्ठ रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं, फिर मूसा अलैहिस्सलाम हैं, फिर नूह अलैहिस्सलाम एवं ईसा बिन मर्यम अलैहिस्सलाम हैं। इन्हीं पाँच रसूलों का विशेष रूप से इस आयत में वर्णन है :

﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِيثَٰقَهُمۡ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٖ وَإِبۡرَٰهِيمَ
وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبۡنِ مَرۡيَمَۖ وَأَخَذۡنَا مِنۡهُم مِّيثَٰقًا غَلِيظٗا ٧﴾

"तथा (याद करो) जब हमने नबियों से उनका वचन लिया। तथा (विशेष

रूप से) आपसे और नूह और इबराहीम और मूसा और मरयम के पुत्र ईसा से। और हमने उनसे दृढ़ वचन लिया।" [सूरा अहज़ाब : 7]

हमारा ईमान है कि सभी रसूल मनुष्य तथा सृष्टि थे। उनके अंदर रब होने की विशेषताओं में से कोई भी विशेषता नहीं पाई जाती थी। वे सभी महान अल्लाह के बंदे हैं, जिन्हें उसने अपने संदेश पहुँचाने के लिए चुना और उन्हें अपनी बंदगी का दर्जा दिया। महान अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को, जो अंतिम और सबसे श्रेष्ठ रसूल हैं, यह कहने का आदेश दिया है :

﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ...﴾

"आप कह दें कि मैं अपने लिए किसी लाभ और हानि का मालिक नहीं हूँ, परंतु जो अल्लाह चाहे।" [सूरा आराफ़ : 188]।

आख़िरत के दिन पर ईमान

हम आख़िरत के दिन यानी क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं, जिसके बाद कोई दिन नहीं होगा। उस दिन अल्लाह तआला लोगों को दोबारा जीवित करके उठाएगा, फिर या तो वे सदैव के लिए स्वर्ग में रहेंगे, जहाँ अच्छी-अच्छी चीज़ें होंगी, या नरक में, जहाँ कठोर यातनाएँ होंगी।

हमारा ईमान मृत्यु के पश्चात मुर्दों को जीवित किए जाने पर है। अर्थात: इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम जब दोबारा सूर फूकेंगे, तो अल्लाह तआला तमाम मुर्दों को जीवित कर देगा :

﴿وَنُفِخَ فِي ٱلصُّورِ فَصَعِقَ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَن فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا مَن شَآءَ ٱللَّهُۖ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخۡرَىٰ فَإِذَا هُمۡ قِيَامٞ يَنظُرُونَ ٦٨﴾

"तथा सूर (नरसिंघा) में फूँक मारी जाएगी, तो जो कोई आकाशों और धरती में होगा, बेहोश हो जाएगा। सिवाय उसके, जिसको अल्लाह चाहे। फिर उसमें पुनः फूँक मारी जाएगी, तो अचानक सब खड़े होकर देखने लगेंगे।" [सूरा ज़ुमर : 68] लोग अपनी-अपनी क़ब्रों से संसार के रब की ओर उठेंगे। नंगे पाँव बिना जूतों के, नंगे बदन बिना कपड़ों के, बिना ख़तना किए हुए।

﴿...كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ﴾

"जिस तरह हमने प्रथम सृष्टि का आरंभ किया, (उसी तरह) हम उसे लौटाएँगे। यह हमारे ज़िम्मे वादा है। निश्चय हम इसे पूरा करने वाले हैं।" [सूरा अंबिया : 104]

हमारा ईमान नामा-ए-आमाल (कर्मपत्र) पर भी है। वह ईमान वालों को दायें हाथ में दिया जायेगा तथा काफ़िरों को पीछे की ओर से बायें हाथ में। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿وَكُلَّ إِنسَٰنٍ أَلْزَمْنَٰهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ كِتَٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾ ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾﴾

"और हमने हर इनसान के (अच्छे-बुरे) कार्य को उसके गले से लगा दिया है। और क़यामत के दिन हम उसके लिए एक किताब (कर्मपत्र) निकालेंगे, जिसे वह अपने सामने खुली हुई पाएगा।

अपनी किताब (कर्मपत्र) पढ़ ले। आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिए काफ़ी है।" [सूरा इसरा : 13-14] एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ۝٧ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا
يَسِيرًا ۝٨ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ۝٩ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ
وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ۝١٠ فَسَوْفَ يَدْعُواْ ثُبُورًا ۝١١ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝١٢﴾

"फिर जिस व्यक्ति को उसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाए गा।

तो उसका आसान हिसाब लिया जाएगा।

तथा वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश लौटेगा।

और लेकिन जिसे उसका कर्मपत्र उसकी पीठ के पीछे दिया जाए गा।

तो वह विनाश को पुकारेगा।

तथा जहन्नम में प्रवेश करेगा। [सूरा इंशिक़ाक़ : 7-12]

हम तराज़ू (मवाज़ीन) पर भी ईमान रखते हैं, जो क़यामत के दिन स्थापित किये जायेंगे । फिर किसी पर कोई अत्याचार नहीं होगा।महान अल्लाह ने फरमाया है :

﴿وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ
وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ۝٤٧﴾

"और हम क़यामत के दिन न्याय के तराज़ू रखेंगे। फिर किसी पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। और अगर राई के एक दाने के बराबर (भी किसी का) कर्म होगा, तो हम उसे ले आएँगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफ़ी हैं।" [सूरा अंबिया : 47] एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿فَمَن ثَقُلَتْ مَوَٰزِينُهُۥ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ۝١٠٢ وَمَنْ خَفَّتْ

مَوَٰزِينُهُۥ فَأُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ فِي جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ﴿١٠٣﴾

"फिर जिसके पलड़े भारी हो गए, वही लोग सफल हैं।

और जिसके पलड़े हलके हो गए, तो वही लोग हैं, जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। जहन्नम ही में सदावासी होंगे।" [सूरा मूमिनून : 102-103]

हम महान अनुशंसा (शफ़ाअत-ए-उज़्मा) पर ईमान रखते हैं, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए ख़ास है, ताकि अल्लाह अपनी मख़लूक़ के दरमियान फ़ैसला कर दे और जन्नत वालों को जन्नत में दाख़िल करने का। हमारा ईमान है कि ईमान वालों में से जो अपने गुनाहों के कारण नरक में प्रवेश कर जायेंगे, तो वहाँ से उन्हें निकालने के लिए भी आप सिफ़ारिश करेंगे। सिफ़ारिश का सम्मान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ-साथ दूसरे नबियों, ईमान वालों और फ़रिश्तों को भी प्राप्त होगा।

हमारा ईमान हौज़ पर है। हमारा ईमान नरक पस स्थापित होने वाले पुल पर भी है, जिससे लोग अपने-अपने कर्मों के अनुसार गुज़रेंगे।

हमारा ईमान क़ुरआन एवं हदीस में में उल्लिखति क़यामत के दिन के तमाम विवरणों एवं भयावह हालात पर है। हमारा ईमान इस बात पर भी है कि जन्नत एवं जहन्नम दोनों इस समय मौजूद हैं और दोनों कभी समाप्त नहीं होंगी। जन्नत उन नेमतों का घर है जिन्हें महान अल्लाह ने ईमानदार और परहेज़गार लोगों के लिए तैयार कर रखा है और जहन्नम उन यातनाओं का घर है जिन्हें अल्लाह तआला ने काफ़िर और ज़ालिम लोगों के लिए तैयार कर रखा है। अल्लाह तआला ने फ़िरऔन के लोगों के क़ब्र और आख़िरत के अज़ाब के बारे में सूचना देते हुए बताया है :

﴿...وَحَاقَ بِـَٔالِ فِرۡعَوۡنَ سُوٓءُ ٱلۡعَذَابِ ۝٤٥ ٱلنَّارُ يُعۡرَضُونَ عَلَيۡهَا غُدُوّٗا وَعَشِيّٗاۚ وَيَوۡمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدۡخِلُوٓاْ ءَالَ فِرۡعَوۡنَ أَشَدَّ ٱلۡعَذَابِ ۝٤٦﴾

"और फ़िरऔनियों को बुरी यातना ने घेर लिया।

वे सुबह और शाम आग पर प्रस्तुत किए जाते हैं, तथा जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, (तो आदेश होगा) कि फ़िरऔनियों को सबसे कठोर यातना में डाल दो। [सूरा ग़ाफ़िर : 45-46] एक अन्य स्थान में कहा है :

﴿وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ ٱلۡعَذَابِ ٱلۡأَدۡنَىٰ دُونَ ٱلۡعَذَابِ ٱلۡأَكۡبَرِ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُونَ ۝٢١﴾

"और निश्चय हम उन्हें (आख़िरत की) सबसे बड़ी यातना से पहले (दुनिया की) निकटतम यातना अवश्य चखाएँगे, ताकि वे पलट आएँ।" [सूरा सजदा: 21]

इसलिए एक मोमिन पर अनिवार्य है कि इन ग़ैब की बातों से सम्बन्धित, जो कुछ किताब एवं सुन्नत में उल्लिखित है, उस पर बिना किसी आपत्ति के ईमान ले आये तथा सांसारिक मामलात पर क़यास करते हुए उनका विरोध न करे। क्योंकि आख़िरत के मामलात की सांसारिक मामलात से तुलना करना उचित नहीं है। दोनों के बीच बड़ा अन्तर है।

भली-बुरी तक़दीर पर ईमान

हम भली-बुरी तक़दीर पर ईमान रखते हैं। तक़दीर दरअसल महान अल्लाह का, अपने ज्ञान तथा हिक्मत के अनुसार, विश्व के सम्बन्ध में निर्धारित किया गया फैसला है।

तक़्दीर की चार श्रेणियाँ हैं :

ज्ञान : हमारा ईमान है कि महान अल्लाह अपने अनादिकाल एवं सर्वकालिक ज्ञान के द्वारा, हर चीज़ के सम्बन्ध में सब कुछ जानता है। अर्थात जो हो चुका है उसको भी जानता है और जो होने वाला है उसको भी जानता है। इसी तरह भविष्य में होने वाला कौन-सा काम किस प्रकार होगा, इस का भी वह ज्ञाता है।

लिपिबद्ध करना : हमारा ईमान है कि महान अल्लाह ने लौह-ए-महफ़ूज़ में क़यामत तक जो कुछ होने वाला है, उसे लिख रखा है। महान अल्लाह ने फरमाया है :

﴿أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِى ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَٰلِكَ فِى كِتَٰبٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٌ ۝٧٠﴾

"(ऐ रसूल!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है, जो आकाश तथा धरती में है? निःसंदेह यह एक किताब में (अंकित) है। निःसंदेह यह अल्लाह के लिए अति सरल है।" [सूरा हज्ज : 70]

इच्छा : हमारा ईमान है कि कोई भी चीज़ अल्लाह की इच्छा के बिना नहीं होती। महान अल्लाह जो चाहता है, वह होता है और जो नहीं चाहता, वह नहीं होता। महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ...﴾

"और आपका पालनहार जो चाहता है पैदा करता है और चुन लेता है।" [सूरा क़सस : 86]

पैदा करना : हमारा ईमान है कि अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला

है। महान अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ ۝٦٢ لَّهُۥ مَقَالِيدُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ...﴾

"अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है तथा वही प्रत्येक वस्तु का संरक्षक है।

आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं।" [सूरा ज़ुमर : 62-63]

अतः बन्दे जो भी काम करते हैं, चाहे उसका संबंध कथन से हो, कर्म से हो या उसका निष्क्रियता से हो, सब अल्लाह के ज्ञान में है एवं उसके पास लिपिबद्ध है। वह अल्लाह के चाहने से होते हैं और उसकी रचना के नतीजे में सामने आते हैं।

लेकिन इसके साथ-साथ हमारा यह भी ईमान है कि महान अल्लाह ने बन्दों को एख़्तियार तथा शक्ति दे रखी है, जिसके आधार पर ही कर्म संघटित होते हैं; इसलिए पापी को अपने पाप को सही ठहराने के लिए, भाग्य को प्रमाण और दलील बनाने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि वह अपने एख़्तियार से पाप करता है और उसे इसका बिल्कुल ज्ञान नहीं होता कि महान अल्लाह ने उसके भाग्य में यही लिख रखा है। क्योंकि किसी कार्य के होने से पूर्व कोई नहीं जान सकता कि महान अल्लाह ने उसे उसके भाग्य में लिख रखा है। महान अल्लाह ने फरमाया है:

﴿...وَمَا تَدۡرِي نَفۡسٞ مَّاذَا تَكۡسِبُ غَدٗا...﴾

"और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा।" [सूरा

लुक़मान : 34]

हम अल्लाह तआला से प्रार्थना करते हैं कि हमें ज्ञान और अमल की तौफ़ीक़ दे, हमें लाभकारी ज्ञान प्रदान करे, और जो ज्ञान हमें दिया है उससे हमें लाभान्वित करे, हमारे ज्ञान में वृद्धि करे, हमारे दीन की हिफाज़त करे, हमारे नेक अमल को स्वीकार करे, और हमें ग़लती से बचाए रखे। आमीन।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही की है, जो सारे संसारों का पालनहार है।

अल्लाह की दया एवं शांति की जल-धारा बरसे हमारे नबी मुहम्मद पर तथा आपके परिवार एवं समस्त साथियों पर।

❋❋❋

सूची

शुद्ध अक़ीदा 2
ईमान के छह स्तंभ : 12
अल्लाह पर ईमान 13
फ़रिश्तों पर ईमान 16
आकाशीय ग्रंथों पर ईमान 18
रसूलों पर ईमान 22
आख़िरत के दिन पर ईमान 25
भली-बुरी तक़दीर पर ईमान 29

❁❁❁

رئاسة الشؤون الدينية
بالمسجد الحرام والمسجد النبوي

رسالة الحرمين

हरमैन का संदेश

मस्जिद -ए- हराम एवं मस्जिद -ए- नबवी के आगंतुकों के लिए मार्गदर्शक सामग्री विभिन्न भाषाओं में